

# ओमशान्ति मीडिया

18 जनवरी विश्व शांति दिवस पर विशेष

वर्ष - 15

अंक-23

मार्च-1, 2015



पाक्षिक

माउण्ट आबू

₹ 8.00

## परमाणु शक्ति से ज्यादा ताकतवर है हमारे मन की शक्ति: शर्मा

ब्रह्माकुमारी संस्थान के शांतिवन परिसर में व्यापार एवं उद्योग प्रभाग की ओर से राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित



**शांतिवन।** व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा 'व्यापार के अतिरिक्त जीवन' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए एस.के. शर्मा, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, आर.एन. मुखिया तथा अन्य।

**शांतिवन।** वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा रावतभाटा परमाणु ऊर्जा केन्द्र के साइट निदेशक एस.के. शर्मा ने कहा कि आज भले ही दुनिया में परमाणु सबसे बड़ी शक्ति के तौर पर है, लेकिन इस परमाणु की खोज करने वाला भी मनुष्य का मन है। सही मायने में परमाणु शक्ति से भी ज्यादा ताकतवर मन की शक्ति है। चाहे तो वह मन के उपजे विचारों से विनाश करे, चाहे तो बेहतर दुनिया का निर्माण। इसलिए मन की शक्ति को जानकर इसे श्रेष्ठ कार्यों में लगाने का प्रयास करना चाहिए। उक्त उद्गार वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा रावतभाटा परमाणु ऊर्जा केन्द्र के साइट निदेशक



एस.के. शर्मा ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के शांतिवन में व्यापार एवं उद्योग प्रभाग की ओर से आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में व्यक्त किये। व्यापार के अतिरिक्त जीवन विषय पर आयोजित सम्मेलन में उन्होंने कहा कि हम पूरा जीवन धन कमाने में ही व्यतीत कर देते हैं और इस बात को समझ नहीं पाते कि इसके अतिरिक्त भी जीवन है जोकि श्रेष्ठ भाग्य का आधार होता है। मनुष्य-मन में इतनी शक्ति है कि उसकी तुलना किसी भी शक्ति से नहीं की जा सकती। पहले किसी भी चीज के लिए मनुष्य के मन में विचार उठते हैं फिर उसका सृजन होता है। चाहे वह विनाशकारी हो या कल्याणकारी। इसलिए अपने मन की शक्ति को हमेशा रचनात्मक कार्यों में

लगाने का प्रयास करना चाहिए। हमारे परमाणु केन्द्र में ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा नियमित रूप से क्लासेज कराई जाती हैं, जिसका सकारात्मक प्रभाव वहां कार्य करने वाले अधिकारी एवं वैज्ञानिकों में देखने को मिल रहा है। इस मौके पर जयपुर के प्रसिद्ध व्यवसायी एम.एल. शर्मा, व्यवसाय एवं उद्योग प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. हरीश, ब्र.कु. मोहन पटेल, व्यापार एवं उद्योग प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. गीता ने भी संबोधित किया।

### कई विषयों पर हुई चर्चा

इस सम्मेलन के दौरान व्यापार एवं उद्योग में सम्पूर्ण सफलता पर चर्चा हुई। साथ ही व्यापार एवं उद्योग के दौरान आने वाली समस्याओं पर भी विचार विमर्श किया गया।

**हमेशा जीवन में एकत्रित करें सत्कर्म रूपी पूंजी**

ज्ञानसरोवर की डायरेक्टर एवं ऑस्ट्रेलिया में सेवाकेन्द्रों की संचालिका ब्र.कु. डॉ. निर्मला ने कहा कि अध्यात्म द्वारा हम व्यवसाय करते हुए भी अविनाशी कमाई इकट्ठा कर सकते हैं। हमें अपने इस जीवन में सत्कर्मों रूपी पूंजी को इकट्ठा करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जीवन में हमारा संबंध सिर्फ भौतिक साधनों से नहीं होता है, बल्कि जीवन जीने की कला से भी होता है। उन्होंने उद्योग व व्यापार में आध्यात्मिकता को अपनाने की अपील की और कहा कि जीवन में राजयोग अपनाना चाहिए।

**जीवन के विकास के लिए ध्यान देना ज़रूरी**

लर्सन एवं दूब्रो लि. के पूर्व उपाध्यक्ष आर.एन. मुखिया ने कहा कि वर्तमान समय भारत में दो शक्तियां कार्य कर रही हैं। एक है प्रजातंत्र और दूसरा यहां हर व्यक्ति अपनी सोच को पहचानता है। विदेशों में कहीं भी आत्मा के संबंध में ज्ञान नहीं दिया जाता है। आने वाले कुछ समय में इंजीनियरिंग समेत कई क्षेत्रों में भारत चीन को पीछे छोड़ देगा, लेकिन इस भागदौड़ में जीवन के विकास के लिए भी ध्यान रखना ज़रूरी है, जिसके लिए आत्मा और परमात्मा का सही ज्ञान ज़रूरी है जो इस संस्थान द्वारा मिलता है।

## ग्रेसी सिंह ने आध्यात्मिक व देशभक्ति के तरानों पर दी मनमोहक प्रस्तुति

**मनमोहक प्रस्तुतियों से लोग हुए भाव विभोर**

व्यापार के अतिरिक्त भी जीवन विषय पर व्यापार एवं उद्योगपतियों के लिए आयोजित सम्मेलन के दूसरे दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम में कलाकारों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम में लगान, मुन्नाभाई एमबीबीएस समेत दर्जनों फिल्मों में अपनी छाप छोड़ने वाली ग्रेसी सिंह ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। भारत माँ और देशभक्ति तरानों पर जमकर कदम थिरकाए। उन्होंने इस कार्यक्रम में 'मेरा तो शिवबाबा एक दूसरा न कोई...', 'आने वाले कल की तस्वीर है हम...', 'मैं भारत का रहने वाला हूँ भारत की



बात सुनाता हूँ...' गीतों पर नृत्य प्रस्तुतियां दी। इसके साथ ही भांगड़ा और देशी परंपरागत नृत्यों की मूल्यों परक प्रस्तुतियों ने लोगों का खूब मनोरंजन किया। कार्यक्रम के बाद आयोजकों एवं देशभर से आए उद्योगपति एवं व्यवसायियों को संबोधित करते हुए कहा कि व्यापार केवल जीवन यापन के लिए है, लेकिन इसके अतिरिक्त भी जीवन है। इसलिए राजयोग ध्यान को जीवन का अंग बनाए। हमारे जीवन में सुबह का आरंभ राजयोग मेडिटेशन से करना चाहिए ताकि दिन भर में आने वाली परस्थितियों में बिना तनाव से कार्य कर सकें व जीवन शांति व खुशी से जी सकें।